दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Ajit Singh Chaddha

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04 ; 13/07/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	0	4	6	7	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

प्रस्तुत गद्यावतरण हिंदी उपन्यास विधा के शिखर पुरुष प्रेमचंद जी के 'गोदान' उपन्यास से है जो इनके लेखन के आखिरी दौर (1936) में लिखा गया।

यह संवाद शहरी कथा के मुख्य पात्र 'मेहता' एवं 'मालती' के मध्य का है जहाँ मेहता के विवाह प्रस्ताव के संबंध में मालती प्रत्युत्तर देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मालती मेहता से कहती है कि हम आपस में प्यार करते है एवं एक-दूसरे के लिए प्राण न्योछावर भी कर सकते है परंतु विवाह द्वारा हम रिश्ते से बंधकर रह जाएंगे एवं हमारी कामनाएं 'स्व' तक सीमित रह जाएगी। अतः यही ~~प्रेरणा~~ प्रेरणा है कि हम आपस में दोस्त बनकर रहे और सामाजिक कार्यों में अपने को समर्पित कर आत्म-विस्तार करें।

विशेष

(1) गोदान में प्रेमचंद ने शहरी छायावादी प्लेटोनिक-प्रेम का चित्रण किया है।

(2) प्रेम को विवाह की बजाय आध्यात्मिक बनाकर समाज-सेवा द्वारा अमर बनाने की भावना

(3) सहज खड़ी बोली भाषा जो हिंदी प्रेम के किसी भी पाठक के लिए खास है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ हिंदी नाटक के प्रतिनिधि रचनाकार प्रेमचंद के 'गोदान' नाटक से ली गई जो उन्होंने यथार्थवाद लेखन के दौर में रचा।

प्रस्तुत संवाद डॉ. मालती एवं एक रोगी के बीच है जहाँ मालती शहरी मध्यवर्ग के यथार्थ को उद्घाटित करती है।

मालती पूँजीवादी सभ्यता के बारे में बताती हुई कहती है कि इस संसार में हर कोई लाभ के लिए कार्य करता है। धन-प्राप्ति की अभिलाषा से धनवान रोगी के साथ नम्रतापूर्ण एवं अच्छा व्यवहार करते है तो गरीब डॉक्टर की ओर देखने से भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उतराते है। अतः पूँजीवादी सभ्यता में मानव-भावनाओं की बजाय धन केंद्र में आ गया है।

विशेष:

(1) पूँजीवादी सभ्यता की स्वार्थपरक मनोवृत्ति का वर्णन।

(2) लाभ पर आधारित संबंधों का खोखलापन।

(3) वर्तमान समय में भी शहरी वर्ग के मध्य ऐसी धन लोलुप मनोवृत्ति दृष्टव्य है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत व्याख्येय हिंदी नाटक विधा के केंद्रीय व्यक्तित्व जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है।

यह संवाद नाटक के स्त्री पात्रों देवसेना एवं विजया के मध्य का है जहाँ वे कविता पर अपने-२ विचार प्रस्तुत करती है।

देवसेना विजया से कविता के अर्थ एवं महत्व को बताती हुई कहती है कि कविता लिखने का गुण अति पवित्र है। एक कविता ही अपने जीवन में अंधकारों के बीच इकारा का तो असत् दशा के बीच 'सत्'

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का एवं चेतनाहीन व चेतन का और व्यक्ति के बाहरी जगत के भावों का परिचय अंतर्मन से कराती है।

<u>विशेष</u>

(1) छायावादी प्रेम दृष्टि का निरूपण।

(2) जीवन में कविता का महत्व।

(3) जीवन की निरर्थकता को समाप्त कर रसपूर्ण बनाने में कविता की महत्ता।

(4) मनोवैज्ञानिक एवं ~~##~~ बाहरी-भीतरी अस्तित्व की एकता की स्थापना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

प्रस्तुत संवाद में रचनाकार जीवन की निरंतरता को बताता है कि जीवन में अच्छे-बुरे क्षण हर व्यक्ति के यहाँ आते हैं। समय सबका हमेशा एक सा नहीं रहता है। अतः यदि व्यक्ति के जीवन में कोई कठोर अनुभव आता है तो भी उसे भोगना चाहिए।

अपने दास (दारा) जीवन से निराश होकर मृत्यु का वरण करने के क्रम में प्रस्तुत संवाद मारिश द्वारा दारा से किया गया है। 'दिव्या' नामक उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रचनाकर्म किया गया है।

विशेष

(1) सहज, बोधगम्य भाषा।

(2) बौद्ध दर्शन एवं भारतीय दर्शन की 'समय की निरंतरता' के अनुरूप।

(3) जीवन में अच्छा, बुरा हर समय में औदात्य बनाए रखने का संदेश।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

प्रस्तुत गद्यावतरण नई हिंदी कहानी के प्रसिद्ध कहानीकार ~~रघुवीर सहाय~~ द्वारा ~~शिवप्रसाद सिंह~~ (धर्मवीर भारती) रचित कहानी 'गुलकी बन्नो' से उद्धृत है जिसे राजेंद्र यादव ने 'एक दुनिया समानांतर' नाम से संकलित किया है।

गुलकी के पति एवं गुलकी की बुआ के मध्य का संवाद है।

गुलकी का पति गुलकी की बुआ के घर आया है। नन्हों के द्वारा उसके पति की दूसरी शादी का विरोध किया जाता है, तो उसे पीटा जाता है एवं घर के सारे काम करवाकर भी उपेक्षित रखा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाता है। अपनी पितृसत्तात्मक सोच के वश (गुलकी) का पति स्त्री का काम बच्चे पैदा करना, घर का काम करना, पति की सेवा करना समझता है। कैसे एक स्त्री जो बच्चा पैदा करने में असमर्थ है, उसका पति एवं बुआ के अपने घर में शारीरिक-मानसिक शोषण होता है, यह सब इस कहानी में दिखाया गया है

<u>विशेष</u>

(1) नई कहानी के दौर में बाँझ स्त्री, विधवा ऐसे पात्र केंद्र में।

(2) स्त्री के साथ घरेलू हिंसा का चित्रण।

(3) पुरुष की पितृसत्तात्मक एवं स्त्री के प्रति अधिकारात्मक प्रवृत्ति।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ <u>अपने समय की</u> भी है और <u>भविष्य की भी</u> हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

मुंशी प्रेमचंद उपन्यास लेखन की धारा के केंद्रीय व्यक्तित्व हैं जिन्होंने पूर्ववर्ती आदर्शवादी उपन्यास लेखन की धारा को चरम यथार्थवाद तक पहुँचाया। इसी क्रम में यह स्वाभाविक ही था कि वे अपने समाज के भीतरी एवं बाहरी चिंताओं को दिखाते।

प्रेमचंद का समय सामंतवादी व्यवस्था के उत्तरार्ध एवं उभरते पूँजीवाद के संधि का समय है जहाँ प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज की निम्न चिंताओं को उपन्यास एवं कहानियों में दर्शाया →

(1) वृद्धों की समस्या = बूढ़ी काकी, चीफ की दावत

(2) वैधव्य की समस्या = गोदान (झुनिया)

(3) बेमेल/अनमेल विवाह = नया विवाह

(4) सांप्रदायिकता = प्रेमचंद में बंबई में दंगों में मृत्यु का प्रसंग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) किसानों की समस्याएँ = • पूस की रात (कहानी)
• प्रेमाश्रम (उपन्यास)
• गोदान में 'होरी'

(6) दलित शोषण = • गोदान में 'सिलिया'
• दूध का कर्ज़
• ~~[illegible]~~ गुल्ली डंडा
• कफ़न

(7) नेतृत्व वर्ग की कर्मण्यहीनता = शतरंज के खिलाड़ी

इत्यादि कहानियों के अतिरिक्त 'कायाकल्प' उपन्यास में सांप्रदायिकता का विस्तृत चित्रण, सेवासदन में वेश्याओं की दशा तो रंगभूमि में किसान के शोषण का विस्तार से चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद सामाजिक यथार्थवादी मनोवैज्ञानिक धारा के रचनाकार हैं जो शोषण की परि॰ तो चित्रित करते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हीं हैं, साथ वर्गगत चरित्रों द्वारा बिंब का निर्माण कर इसे मन के पर्दे पर उकेरते भी हैं।

भविष्य की चिंता के रूप में 'गोबर' के माध्यम से प्रेमचंद ने आगामी पूँजीवादी व्यवस्था का भी अनुमान किया है जहाँ कारखानों में मज़दूरों का शोषण उद्योगपति करेंगे। इस व्यवस्था में प्राचीन किसान-ज़मींदार व्यवस्था का ही रूप बदलकर सामने आता है जहाँ शोषण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। 'गोबर' जैसे शहरी मज़दूर शाम को काम करने के पश्चात् घर आने के दौरान कैसे नशे का शिकार हो जाते हैं एवं पत्नी-बच्चों की दुर्गति हो जाती है। इन सभी का बेहतर चित्रण प्रेमचंद ने किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा 'स्त्रीवादी आंदोलन' की सुगबुगाहट भी शहरी पात्रों में दिखी है। स्वतंत्रता आंदोलन के वर्गीय चरित्र का भी एक उदाहरण आता है जहाँ धनिया कहती है कि 'गरीबों के शोषण से सुराज नहीं मिलेगा, सुराज तो न्याय करने से मिलेगा।'

प्रेमचंद की रचना में इसी प्रकार के चित्रों, समस्याओं का एलबम है जिसे देखकर रामविलास शर्मा ने भी कहा है कि "1918 से 1936 के बीच का भारतीय इतिहास भी मिट जाए तो इसे प्रेमचंद की रचनाओं द्वारा पुनः लिखा जा सकता है।"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नई कहानी' आंदोलन के मूल में आम मध्यवर्गीय शहरी आ गया है जिसकी मनोदशा, नैतिक अकेलापन, अजनबीपन का चित्रण कहानीकारों ने किया है। कमलेश्वर ने भी 'खोई हुई दिशाएँ' नामक कहानी में शहरी चरित्र के अनछुए पहलों का रहस्योद्घाटन किया है।

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी संवेदना के स्तर पर पूर्ववर्ती कथानक ढाँचे पर लिखी कहानियों से इस मायने में अलग है कि यहाँ यथार्थ का चित्रण इसके अनिश्चित क्रम में किया गया है क्योंकि स्वयं जीवन में कोई तार्किकता, क्रम नहीं है।

इस कहानी में एक मध्यवर्गीय व्यक्ति की कहानी है जो दिल्ली में रहता है एवं एक दिन CP में

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

घूमने जाता है। यह सब दिन की कहानी है।
मुख्य पात्र में रास्ते में एक मित्र से मिलता है जो लेखक द्वारा आर्थिक सहायता माँगे जाने पर तुरंत इस निकलने का बहाना ढूँढता है। यहाँ कहानीकार ने मध्यवर्गीय स्वार्थी व्यक्तित्व का चित्रण किया है जहाँ संबंध धन पर टिके हैं न कि भावनाओं पर।

अपनी पूर्ववर्ती प्रेमिका इंद्रा से मिलने के लिए चंदर निकलता है तो रास्ते में एक सरदार ड्राइवर किराया अधिक लेने के चक्कर में उसे पहचानने से मना कर देता है।

CP पार्क में बैठी युवतियों के सौंदर्यवादी स्थूलता की चेतना एवं भौतिकवादी मनोवृत्ति से भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चंदर उखड़ता है। हर कोई अपने मतलब के लिए लगा है तभी हम में कहानीकार कहता है → "यह देश की राजधानी है, यहाँ सड़के आपको दूसरे शहर ले जाती है परंतु वास्तव में कहीं नहीं।"

पूर्व प्रेमिका द्वारा चंदन को चाय में चीनी की याद भूल जाने से रिश्तों के उथलेपन के संबंध में चंदर की भावना और सुदृढ़ हो जाती है। अंत में वह खुद को पहचानने से इनकार कर अपनी पत्नी निर्मला के गोद में जाकर बैठ जाती है।

इस प्रकार 'खोई हुई दिशाएँ' अस्तित्ववादी दौर के वातावरण में शहरी मध्यवर्ग के भावनात्मक टकराव, अलगाव, अजनबीपन से पैदा हुए संत्रास को व्यक्त करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी निबंध लेखन की परंपरा के शिखर पुरुष रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित "कविता क्या है" एक मनोविकारपरक निबंध है। शुक्लजी ने निबंध की परंपरा को अपने सुचिंतित विचारों से इतना समृद्ध किया कि आगामी 100 वर्षों तक भी उनकी जगह कोई नहीं ले पाया है।

इस निबंध में शुक्लजी कविता विषय की वैज्ञानिक तरीके से जाँच-पड़ताल करते हैं एवं कविता को हृदय की मुक्तावस्था की दशा बताते हैं। शुक्लजी के अनुसार जिस प्रकार आत्मा की मुक्ति की दशा 'ज्ञानदशा' कहलाती है उसी प्रकार मनुष्य के हृदय की मुक्तावस्था 'रसदशा'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहलाती है। इस रसदशा को गृहण करने के लिए जिस माध्यम की आवश्यकता है, वहीं कविता है।

शुक्लजी के अनुसार निबंध में विचार रससिक्त करे जाने चाहिए। इसी कारण इनके निबंध मनोविकारपरक हैं जो विचारों के प्रहार से मनुष्य हृदय के विकारों की समाप्ति करते हैं।

कविता क्या है? में रामचंद्र शुक्ल ने कविता के लिए आवश्यक तत्वों के रूप में – अलंकार, रीति एवं बिंब जैसे तत्वों को रेखांकित माना है। बिंब के संबंध में उनका विचार है कि 'कविता के अर्थग्रहण के लिए वाक्य ही नहीं बिंबग्रहण भी अपेक्षित है।'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार अलंकारों की महत्ता भी स्थापित करते हैं →

" जिस प्रकार एक कुरूप स्त्री आभूषण पहनकर सुंदर नहीं लग सकती उसी तरह केवल अलंकारों के ढेर के कारण एक विचारशून्य कविता सुंदर नहीं लगती।"

शुक्लजी ने काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था को स्वीकार करते हुए काव्य का एक कर्तव्य सामाजिक समस्याओं को उठाना भी माना है। इसी तर्ज पर कबीर, जायसी इनके तो तुलसीदास को उत्तम ठहराते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सकें? 20

मोहन राकेश के स्थानापूर्व से पूर्व भी हिंदी नाटक के लिए एक मौलिक रंगमंच की स्थापना की माँग उठ चुकी थी जहाँ जयशंकर प्रसाद जैसे नाटककारों ने नाटक अनुरूप मंच निर्माण की बात कही तो कुछ मन्चों ने रंगमंच के अनुरूप नाटक लिखने पर ज़ोर दिया।

मोहन राकेश के समय 'पारसी रंगमंच' एवं 'पाश्चात्य रंगमंच' ही नाटक दृश्यन की दृष्टि से लोकप्रिय थे परंतु वे हिंदी नाटकों एवं जनता की माँग पूरा नहीं करते थे। इसी क्रम में मोहन राकेश ने कहा कि

" रंगमंच को हिंदी क्षेत्र की आकांक्षाओं को पूरा करना होगा, उसे हमारे विचारों, सोच को [illegible]

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ही चित्रित करना होगा")

मोहन राकेश ने कहा कि रंगमंच स्थापना की राह हमारे सामने पाश्चात्य नाटक रंगमंच के रूप में है परंतु वह संसाधन एवं उपकरण प्रधान है एवं हिंदी रंगमंच की अपनी समस्याएँ एवं सीमाएँ हैं। कुछ रचनाकारों ने रंगमंच स्थापना के लिए सरकारी सहायता की भी माँग की। इस संबंध में मोहन राकेश का कहना था कि "रंगमंच स्थापना का मतलब यह नहीं है कि सरकारी सहयोग से यत्र-तत्र कार्यशालाएँ बना दी जाएँ बल्कि भाषा एवं मानव तत्व को समृद्ध बनाया जाए।"

हिंदी रंगमंच के संबंध में मोहन राकेश का मानना था कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'रंगमंच के लिए नाटक हो'। अपने नाटक आषाढ़ का एक दिन में भी उन्होंने यह लिखा कि यह नाटक रंगमंच चित्रण हेतु कुछ सहायता दे सकेगा।

आषाढ़ का एक दिन में भी उन्होंने 3 अंक एवं 6 दृश्य रखे हैं जो नाटककारों एवं रंगमंचकारों की दृष्टि से सरल हैं। दृश्य भी अत्यधिक सरल हैं जिन्हें बहुत थोड़े परिवर्तन के साथ दिखाया जा सकता है।

भाषा के स्तर पर राकेश मोहन ने अपने नाटकों की भाषा सजीव एवं आमजन के लिए ग्राह्य रखी है जहाँ भाषा नाटक की सफलता में साधक है न कि 'स्कंदगुप्त' नाटक की तरह बाधक।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नाटककार के लिए उपकरणों की
भी अत्यधिक थोड़ी माँग है ताकि
न्यून्तम संसाधनों पर नाटक का
चित्रण / प्रस्तुति हो सके।

मोहन राकेश द्वारा लिखे गये नाटक
तत्काल इस समय में खेले जा सकते हैं
जहाँ आषाढ़ का एक दिन केवल 6 घंटे
में मंचित किया जा सकता है

अतः हिंदी रंगमंच की आधुनिक
सशक्त परंपरा में मोहन राकेश का
महत्वपूर्ण योगदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

प्रेमचंद यथार्थवादी रचनाकार है
जिनकी रूचि एवं रचनाओं का मुख्य
विषय समाज रहा है। सामाजिक यथार्थ
पर अच्छी पकड़ होने के कारण इन्होंने
पात्रों की बाहरी एवं भीतरी ~~मनोवैज्ञ~~ मनो-
-विज्ञान की थाह ली है।

प्रेमचंद ने अपनी कहानी 'ईदगाह'
में बालक हामिद की उम्र इतर मानसिक
परिपक्वता एवं अमीना की मातृत्व दशा
का सुंदर चित्रण किया है जैसे सामाजिक
विसंगतियों एवं विद्रूपताओं ने बालक को
असामयिक परिपक्वता हेतु बाध्य कर
दिया है, इसका सुंदर प्रस्तुतीकरण
प्रेमचंद जी ने किया है

'नया विवाह' नामक कहानी में
बेमेल विवाह के कारण लाला डंगामल

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से विवाहित लीला की विवाहेत्तर 'तोतराम' के प्रति स्नेह भी एक कम उम्र की लड़की के मनोविज्ञान को बताता है।

'बड़े घर की बेटी' में आनंदी एवं देवर के बीच लड़ाई के पश्चात बताया → 'आँसू तो स्त्री की पलकों पर होते हैं'। अतः स्त्री मनोविज्ञान का भीतरी एवं बाहरी व्यक्तित्व जितना प्रेमचंद से बेहतर और कोई नहीं कर पाये।

गोदान में भी एक प्रसंग आता है जब बूढ़ों की मानसिक दशा के संबंध में प्रेमचंद बताते हैं -

"अतीत के सुखों, वर्तमान के दुखों एवं भविष्य के सर्वनाश से बढ़कर बूढ़ों के लिए कोई रुचिकर प्रसंग नहीं है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'बूढ़ी काकी' नामक कहानी में वृद्धावस्था में व्यक्ति की शिथिल हो जाने वाली इंद्रियों एवं वृद्धों का बच्चों के रूप में रूपांतरण को भी प्रेमचंद ने बखूबी दिखाया है। प्रेमचंद कहानी में कहते हैं कि 'बुढ़ापे में व्यक्ति का बचपन पुनः उभर आता है।'

अतः मानव मनोविज्ञान के विशेषज्ञ प्रेमचंद ने न केवल चरित्रों का बल्कि उनके भीतरी-बाहरी व्यक्तित्व का भी सहज वर्णन किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिए। 15

हरिशंकर परसाई द्वारा व्यंग्य के रूप में रचित कहानी 'भोलाराम का जीव' भारतीय कार्यपालिका की व्यवस्था में विसंगतियों का चित्रण करती है जहाँ सबसे बड़ी समस्या - '<u>भ्रष्टाचार</u>' बनकर सामने आई है।

भोलाराम एक रिटायर्ड कर्मचारी था जो रिश्वत न दे पाने के कारण अपनी पेंशन चालू नहीं करवा पा सका। बार-2 सरकारी दफ़्तरों के चक्कर काटने के करने में उसकी मृत्यु ही हो जाती है परंतु उसकी पेंशन की फाईल सरकारी फाइलों के बोझ तले ही पड़ी रहती है।

भोलाराम एक ईमानदार व्यक्ति है जिसके साथ व्यवस्था ने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विषम व्यवहार किया है। मरने के पश्चात् भोलाराम के जीव की आत्मा की खोज यमलोक से यम का दूत करता है एवं उसे गायब पाता है। स्वर्ग एवं नरक लोक के इस प्रसंग का सांकेतिक व्यंग्य हेतु प्रयोग किया गया है। भोलाराम के जीव की आत्मा की पड़ताल में पता लगता है कि सरकारी तंत्र ने उसकी हत्या कर डाली है। इस संबंध में यह शेर मन में आता है →

"माना कि तुम तगाफुल ना करोगे
मगर खाक हो जाएंगे तुमको खबर होने तक"

अतः भोलाराम के जीव की पहचान अंत में फाइल पहचान के रूप में उसका नाम पुकारे जाने के संबंध में होती है। अब भोलाराम को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

फाइल में ही रहना प्रिय हो गया है जो विकृत व्यवस्था द्वारा व्यक्ति के मानसिक विकृति को निरूपित करता है।

भोलाराम का जीव आज के न्यायपालिका के परिदृश्य में भी उचित बैठता है जहाँ बिना घूस दिए कोई काम नहीं होता एवं सालों साल अदालतों में केस चलता रहता है परंतु न्याय गायब हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) गुलाबराय के निबंध भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत गद्यावतरण 'भारत-दुर्दशा' नामक नाटक से अवतरित है जिसकी रचना महान् नाटककार भारतेंदु ने की है।

प्रस्तुत संवाद 'अंधकार' नामक स्थिति (घटीड) पात्र का है। व्यक्ति के जीवन में अंधकार आने से पड़ने वाले प्रभावों को बताया गया है।

अंधेरा कहता है कि तमोगुण से उसकी ~~उ~~ उत्पति है। चोर, लंपट, उल्लू सभी पतित लोग अंधेरे के ही अनुसरणकारी हैं। मूर्खों के मन-मस्तिष्क में भी अंधेरे का वास है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन एवं मस्तिष्क पर अंधेरे के प्रभाव से पर्दा डल जाता है एवं व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन में अज्ञानता एवं भौतिक जीवन में अंधेरा छा जाता है।

विशेष :

(1) भारतवर्ष की दुर्दशा में अंधेरे, मदिरा, धर्म इत्यादि की भूमिका।

(2) 'अंधेरा' का मानवीकरण करके उसे पात्र बना दिया गया है।

(3) मानसिक, आध्यात्मिक जीवन के साथ-2 व्यक्ति के भौतिक जीवन में भी अंधेरे के प्रभाव का वर्णन किया गया है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनाकार का मत है कि मनुष्यों के प्रयत्नों से सफलता, असफलता प्राप्ति स्वाभाविक है। अतः कुछ असफलताओं के वशीभूत होकर अपना जीवन उद्देश्यहीन एवं निरर्थक मान लेना अनुचित है। अतः व्यक्ति को अपने जीवन में सदैव महत्वाकांक्षाएँ रखनी चाहिए ताकि उनकी प्राप्ति में प्रयत्न कर सके।

विशेष

(1) व्यक्ति का जीवन दर्शन

(2) भारतीय परंपरा के अनुरूप सफलता एवं विफलता को एक मानकर चलने का संदेश।

(3) मानवीय प्रयासों के परिणाम

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का महत्व।

भाषा: ० सहज, सरल एवं बोधगम्य
० माधुर्य रस से भरपूर।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सतत रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

प्रस्तुत गद्यावतरण यशपाल द्वारा रचित नाटक 'दिव्या' से लिया गया है।

महाश्रेष्ठि प्रेस्थ अपने पृथुसेन को एक उच्चकुलीन कन्या 'सीरो' से विवाह हेतु उकसाता है एवं 'दिव्या' को पाने के चक्कर में होने वाली हानि का भी वर्णन करता है।

प्रेस्थ पृथुसेन को सामंतवादी पितृसत्तात्मक सोच के वशीभूत होकर नारी को जीवन का साध्य न मानकर अपनी भौतिक सफलताओं का माध्यम बनाने संबंधी विचार प्रकट करता है। दिव्या के चक्कर में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक सम्मान एवं समृद्धता को न ठुकराने का आग्रह करता है। चाणक्य के कथन का सहारा लेकर स्त्री को भोगने एवं साधन मानने वाले दर्शन को प्रदर्शित करता है। प्रेक्ष्य के अनुसार एक महत्वाकांक्षी एवं स्वर्गाकांक्षी पुरुष के लिए तो नारी नरक का द्वार मात्र है।

विशेष:

(1) ऐतिहासिक वातावरण में सामंतवादी एवं पितृसत्तात्मक सोच का वर्णन।

(2) आज भी विज्ञापनों में एवं आम जीवन में नारी का वस्तुकरण अर्थात वस्तु मात्र मानने का विचार प्रस्तुत किया गया।

(3) प्राचीनकाल से ही नारी - पुरुष असमानता की जड़ों का पता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत व्याख्येय हिंदी नाटक लेखन परंपरा के केंद्रीय व्यक्तित्व जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक स्कंदगुप्त से लिया गया है।

हिंदू धर्म की महिमा का वर्णन संवाद से पता चलता है।

हिंदू धर्म में कर्म एवं अध्यात्म के बीच के संतुलन को दर्शाते हुए कहा गया है कि सिर्फ भौतिक जगत से विमुख होकर आध्यात्मिक स्तर पर शांति चाहने वालों का हिंदू धर्म में उतना महत्व नहीं है जितना कि अध्यात्म एवं भौतिकता के बीच संतुलन रखकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जगत से ~~जिम्मेदारी लेने~~ वाले जिम्मेदार व्यक्ति बनता है। हिंदू धर्म में उपदेशक भी अन्य धर्मों की तरह ईश्वरीय अवतार की बजाय राम, कृष्ण के रूप में अवतरित हुए जो ~~के~~ अपने कर्मों एवं अध्यात्म के बीच संतुलन से महान् हुए हैं।

<u>विशेष</u> :

(1) भौतिक जगत से अरुचि दिखाकर जीवन के व्यर्थता का चित्रण।

(2) भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के मध्य संतुलन निर्माण।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, <u>धनिया</u> दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी उपन्यास के शिरोधार्य मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास <u>गोदान</u> से ली गई है।

इन पंक्तियों में बीमार होरी के उपन्यास के अंतिम हिस्से में वर्णन है। धूप से पीड़ित होरी मृत्यु के निकट अपने प्राचीन जीवन की स्मृतियों को याद करता है।

होरी अब स्वास्थ्य की गिरावट से बहुत दुर्बल महसूस कर रहा है एवं लेटे 2 धनिया से संवाद करता है। मृत्यु के निकट जाने पर होरी के मन में उपजे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन के पहले वर्णित दिमाग पर छा जाते है जहाँ गोबर कभी गुल्ली डंडी खेलता है, कभी गोद में तो कभी होरी के चरणों में पड़ा होता है धनिया एवं गाय का दृश्य भी होरी की स्मृति में आता है

विशेष :

(1) सामंतवादी व्यवस्था से किस प्रकार किसान पिसकर मर जाता है, इसका चित्रण।

(2) एक ईमानदार कृषक के जीवन में तमाम प्रयासों के बावजूद शोषण व्यवस्था के कारण विफलता हाथ लगती है।

(3) किसान 'होरी' की दुर्दशा की मार्मिक मृत्यु के रूप में

(4) आज भी किसान ऋण, कर्जे के दबाव में मरने को विवश।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' एक चरित्रप्रधान उपन्यास है, अतः स्वाभाविक है कि नायिका के रूप में दिव्या को केंद्रीय महत्व दिया गया है परंतु मार्क्सवादी मूल्यों के रचनाकार यशपाल व्यक्ति को परिस्थितियों का परिणाम मानते हैं फिर भी उपन्यास में केंद्रीय पात्र के चरित्र विकास की स्वतंत्रता बनाए रखी है।

'दिव्या' भले ही एक उच्चवर्गीय स्त्री है परंतु वह अपनी स्थितियों से वशीभूत है। 'दिव्या' की पूरी जीवन-कथा उपन्यासकार ने शुरुआती नाटकीय मरानी या आत्मसमर्पण नामक दृश्य में प्रस्तुत किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दिव्या पृथुसेन से प्रेम करती है एवं विदेशी आक्रमण के पश्चात् विवाह हेतु भी राजी हो जाती है। दिव्या एक उदात्त पात्र है जो पृथुसेन के दूसरे विवाह पश्चात् उसकी दूसरी पत्नी का दर्जा लेने हेतु भी ~~[illegible]~~ राजी है परंतु युद्धपूर्व भेंट के कारण वह पृथुसेन की संतान से गर्भवती हो जाती है और यहीं से वह पद्धति के अनुरूप चालित होने को बाध्य हो जाती है।

दिव्या दूसरे अंक में 'दारा' नामक दास बनकर सागल जाने को अपनी नियति मान लेती है एवं बारंबार क्रय-विक्रय पश्चात् एक ब्राह्मण के घर दासिका के रूप में पहुँचती है। अपनी स्वामिनी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के बच्चे को दूध मिलने के कारण उसके बच्चे के लिए दूध शेष नहीं रहता एवं अंततः उसके बच्चे की मौत से वह और अधिक दुखी हो जाती है।

तृतीय परिदृश्य में अंशुमाला के रूप में वह अपनी नियति स्वयं गढ़ती है परंतु वहाँ भी समाज रुद्रधीर, पृथुसेन जैसे व्यक्तियों के दबाव में पलायन कर जाती है।

अंत में रुद्रधीर, पृथुसेन के प्रणय-निवेदन को ठुकराकर वह मारिश से विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है क्योंकि वह नारी को किसी पर्दे या पद से न बाँधकर उसे व्यक्ति के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रूप में दर्ज देता है इस रूप से दिव्या ने अंत में अपनी स्थिति स्वयं गढ़ी है

'दिव्या' ही इस उपन्यास को पढ़ने पर एकमात्र केंद्रीय पात्र लगता है जिसका प्रभाव पाठक के मन में रह जाता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बूढ़ी काकी' कहानी वृद्धावस्था का मार्मिक अंकन करती है। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में 'बूढ़ी काकी' की संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

बूढ़ी काकी मुंशी प्रेमचंद द्वारा शुरुआती दौर में लिखी गई कहानी है जब वे आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का अपने काव्य में निरूपण कर रहे थे। मुंशी प्रेमचंद द्वारा वृद्धों की समस्या पर लिखी यह कहानी समाज में तात्कालिक समस्या को उठाती है

बूढ़ी काकी कहानी में काकी के पुत्र एवं पुत्री उसकी संपत्ति का उपभोग करते है परंतु बूढ़ी काकी की उपेक्षा करते है

बूढ़ी काकी के पुत्र के पुत्र के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले भोज

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में सभी लोगों को भोजन कराकर भी बूढ़ी काकी की उपेक्षा करना समाज में माता-पिता के प्रति कम होते जा रहे प्रेमभाव का द्योतक है

बूढ़ी काकी द्वारा भूखवश जूठे पत्तल चाटना व्यवस्था के मुँह पर तमाचा है जहाँ लेखक ने भी यह जताना चाहा है कि 'बूढ़ी ब्राह्मणी को पत्तल चाटना पड़ रहा है इससे बुरा और कुछ नहीं।'

अतः बूढ़ी काकी के अंत में प्रेमचंद भारतीय सभ्य परिवेश के रूप का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रदर्शित करते हुए अंत में मानवता को सच्ची भूल का अहसास कराते हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कुबेरनाथ राय के निबंधों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

कुबेरनाथ राय ललित निबंधकार है जो अपने निबंध 'उत्तराफाल्गुनी के आसपास' हेतु जाने जाते है।

कुबेरनाथ राय के निबंध मनोविकार के साथ-साथ व्यक्ति की भावनाओं को भी जागृत करते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation